Digitized by eGangotri

स्वयंबोध उर्दू

URDU

SELF INSTRUCTOR

बमूजिब हुक्म श्रीयुत जनाब विलि
लियम ह्वाईट साहिब बहादुर के
बाबू शिवप्रसाद
ने बनाया

चौथी बार छापा गया

मुक़ाम लखनऊ नवलकिशोर यंत्रालय मे
मुनशी नवलकिशोर ने छापा

दाम दो आना
=)

सन १८६१ ईसवी

RANBIR LIBRARY JAMMOO No. 2980
PRATAP SINGH MUSEUM

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

6379

Price -/1/-.

6379

by Shiv Prasad

491.435

S 61 S

Rajeev

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जान ना चाहिये कि यह उर्दू जो अब हमारे मुल्क की मुख्य भाषा गिनी जाती है और कचहरियोंमे सारे कागज़ पत्र इसी के दर्मियान लिखेजाते हैं बहुत थोड़े दिनोंसे जारी हुई है उर्दूका अर्थ लशकर है जब कि तुर्क अफ़ग़ान और मुग़लों की हिन्दुस्तानमे बादशाहत हुई और उन के आदमी यहां लशकरके दर्मियान बाज़ारियों के साथ हर वक़्त ख़रीद फ़रोख़्तमे बोलने चालने लगे तो उन की अरबी फ़ारसी और तुर्की इन लोगों की हिंदी के साथ मिलकर यह एक जुदी बोली बनगई और उसका निकास उर्दू अर्थात लशकर से होने के कारन नामभी उसका उर्दू की ज़बान रखागया पर जिस बोलीमे संस्कृत के शब्द अधिक रहते हैं और हिंदी अक्षरों मे लिखी जाती है उसको हिंदी ही कहते हैं जिसमे फ़ारसी अरबी के लफ़्ज़ बहुत होते हैं और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

फ़ारसी हर्फ़ों में लिखी जाती है उसको उर्दू बोलते हैं
हिन्दी शब्दों के लिखने के लिये जो अक्षर कि फ़ारसी की
वर्णमाला मे नही मिलते उनको उन्हीं फ़ारसी हर्फ़ों से
जोड़ तोड़ कर बना लेते हैं

उर्दू की वर्णमाला मे छयालीस अक्षर हैं उनमें से चौदह
अर्थात् بھ भ پھ फ تھ थ ٹھ ठ جھ झ چھ छ دھ ध ڈ ड ڈھ ढ ڑ ड़ ڑھ ढ़
کھ ख گھ घ केवल हिंदी के हैं फ़ारसी अरबी में नही आ-
ते और चौदह ही अक्षर अर्थात् ث से ح हे خ ख़े ذ ज़ाल ز ज़े
ژ झ़े ص साद ض ज़ाद ط तो ظ ज़ो ع ऐन غ ग़ैन ف फ़े ق क़ाफ़
हिन्दी मे नही आते केवल फ़ारसी या अरबी लफ़्ज़ों
के दर्मियान रहते हैं बाक़ी सब अक्षर मुश्तरिक हैं
अर्थात दोनों ज़ुबान मे काम आते हैं नीचे लिखे
हुए नक़्शे के देखने से इन सब हर्फ़ों का स्वरूप
और उच्चारण बख़ूबी मालूम हो जावेगा ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उर्दू की वर्ण माला का प्रकरण

उर्दू दहनी ओर से बाईं ओर को लिखा जाता है

उर्दू के अक्षरों का स्वरूप जो अलग लिखे जावें	संज्ञा	उच्चारण	उर्दू के अक्षरों का स्वरूप जब मिलाकर लिखे जावें								
			आदि में			मध्य में			अंत में		
			स्वरूप	उदाहरण उर्दू	उदाहरण हिंदी	स्वरूप	उदाहरण उर्दू	उदाहरण हिंदी	स्वरूप	उदाहरण उर्दू	उदाहरण हिंदी
ا	अलिफ	अ	ا	اثر	असर	ا	کار	कार	ا	بنا	बना
ب	बे	ब	بـ	بلا	बला	ـبـ	صبر	सबर	ب	نسب	नसब
			بـ	بخت	बख़्त						
			بـ	بطک	बतक						
بھ	भे	भ	بھـ	بھلا	भला	ـبھـ	سبھا	सभा	ـبھ	بلبھ	वल्लभ
پ	पे	प	پـ	پیر	पैर	ـپـ	سپت	सप्त	ـپ	کلپ	कल्प
			پـ	پست	पस्त						
			پـ	پچا	पचा						
پھ	फे	फ	پھـ	پھیل	फैल	ـپھـ	سپھل	सफल	ـپھ	تلپھ	तलफ
ت	ते	त	تـ	تبر	तबर				ت	بنت	बनत
			تـ	تسما	तसमा	ـتـ	بتر	बतर			
			تـ	تجا	तजा						
تھ	थे	थ	تھـ	تھمبھ	थम्भ	ـتھـ	پتھر	पथर	ـتھ	سپتھ	सपथ
ٹ	टे	ट	ٹـ	ٹکار	टकार	ـٹـ	مٹر	मटर	ـٹ	لپٹ	लपट
			ٹـ	لٹکے	लटके						

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

उर्दू के अक्षरों का स्वरूप जुदा जुदा लिखि जावै	संज्ञा	उच्चारण	उर्दू के अक्षरों का स्वरूप जब मिलाकर लिखि जावैं ॥								
			आदि में			मध्य में			अंत में		
			स्वरूप	उदाहरण		स्वरूप	उदाहरण		स्वरूप	उदाहरण	
				उर्दू	हिंदी		उर्दू	हिंदी		उर्दू	हिंदी
				ٹپک	टपक						
ٹھ	ठे	ठ	ٹھ	ٹھسک	ठसक	ٹھ	پٹھا	पठा	ٹھ	کنٹھ	कंठ
ث	से	स	ثـ	ثبت ثور ثمن	सबत सौर समन	ثـ	کثر	कसर	ث	عبث	अबस
ج	जीम	ज	جـ	جتن	जतन	جـ	سجن	सजन	ج	گنج	गंज
جھ	झीम	झ	جھ	جھاڑ	झमड़	جھ	جھجھر	झझर	جھ	سمجھ	समझ
چ	चे	च	چـ	چشم	चश्म	چـ	بچن	बचन	چ	منچ	मंच
چھ	छे	छ	چھ	چھپر	छप्पर	چھ	پچھم	पछम	چھ	مچھ	मछ
ح	हे	ह	حـ	حبس	हबस	حـ	بحر	बहर	ح	سطح	सतह
خ	ख़े	ख़	خـ	خبر	ख़बर	خـ	سخت	सख़्त	خ	بلخ	बल्ख़
د	दाल	द	د	دکھن	दखन	د	بدن	बदन	د	سند	सनद

Digitized by eGangotri

उर्दू के अक्षरों का स्वरूप जब मिला कर लिखे जावें

उर्दू के अक्षरों का स्वरूप जब उनको लिखें जावें	संज्ञा	उच्चारण	आदि में: स्वरूप	आदि में: उदाहरण उर्दू	आदि में: उदाहरण हिंदी	मध्य में: स्वरूप	मध्य में: उदाहरण उर्दू	मध्य में: उदाहरण हिंदी	अंत में: स्वरूप	अंत में: उदाहरण उर्दू	अंत में: उदाहरण हिंदी
دھ	धाल	ध	دھ	دھمک	धमक	دھ	گدھا	गधा	دھ	بلدھ	बलध
ڈ	डाल	ड	ڈ	ڈپٹ	डपट	ڈ	ہڈا	हडा	ڈ	ڈنڈ	दंड
ڈھ	ढाल	ढ	ڈھ	ڈھکن	ढकन	ڈھ	ٹھنڈھک	ठंढक	ڈھ	ٹھنڈھ	ठंढ
ذ	ज़ाल	ज़	ذ	ذقن	ज़कन	ذ	نذر	नज़र	ذ	لذت	लज़त
ر	रे	र	ر	رحم	रहम	ر	مرد	मर्द	ر	مگر	मगर
ڑ	ड़े	ड़				ڑ	سڑک	सड़क	ڑ	پکڑ	पकड़
ڑھ	ढ़े	ढ़				ڑھ	بڑھل	बढ़ल	ڑھ	نپڑھ	नपढ़
ز	ज़े	ज़	ز	زہر	ज़हर	ز	گزک	गज़क	ز	سبز	सबज़
ژ	ज़े	ज़	ژ	ژرف	ज़र्फ़	ژ	ہژدہ	हज़दः	ژ	کژ	कज़
س	सीन	स	س	سبق	सबक़	س	بست	बस्त	س	مگس	मगस
ش	शीन	श	ش	شکر	शकर	ش	مشق	मशक़	ش	نقش	नक़श
ص	साद	स	ص	صحن	सहन	ص	فصل	फ़सल	ص	شخص	शख़स
ض	ज़ाद	ज़	ض	ضبط	ज़ब्त	ض	ہضم	हज़म	ض	نبض	नब्ज़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उर्दू के अक्षरों का स्वरूप जब अलग लिखे जावें	संज्ञा	उच्चारण	उर्दू के अक्षरों का स्वरूप जब मिला कर लिखे जावें								
			आदि में			मध्य में			अंत में		
			स्वरूप	उदाहरण		स्वरूप	उदाहरण		स्वरूप	उदाहरण	
				उर्दू	हिंदी		उर्दू	हिंदी		उर्दू	हिंदी
ط	तो	त	ط	طلب	तलब	ط	خط	ख़त	ط	غلط	ग़लत
ظ	ज़ो	ज़	ظ	ظفر	ज़फ़र	ظ	نظر	नज़र	ظ	حظ	हज़
ع	ऐ़न	अ़	ع	عقل	अक़्ल	ع	بعد	बाद	ع	جمع	जमा
غ	ग़ैन	ग़	غ	غبن	ग़बन	غ	بغل	बग़ल	غ	صمغ	समग़
ف	फ़े	फ़	ف	فتح	फ़तः	ف	نفر	नफ़र	ف	صیف	सैफ़
ق	क़ाफ़	क़	ق	قلم	क़लम	ق	نقد	नक़द	ق	قلق	क़लक़
ک	काफ़	क	ک کا	کم کام	कमर	ک کا	مکر شکل	मकर शकल	ک	چمک	चमक
کھ	खे	ख	کھ	کھیت	खेत	کھ	مکھن	मखन	کھ	پنکھ	पंख
گ	गाफ़	ग	گ گا	گیا گلا	गया गला	گ گا	جگت سگا	जगत सगा	گ	پتنگ	पतंग
گھ	घाफ़	घ	گھ	گھٹک	घटक	گھ	سگھن	सघन	گھ	اگھ	अघ
ل	लाम	ल	ل	لٹک	लटक	ل	پلک	पलक	ل	شغل	शग़ल

२ भा॰

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उर्दू के अक्षरों का स्वरूप जब कि अलग लिखे जावें	संज्ञा	उच्चारण	उर्दू के अक्षरों का स्वरूप जब मिला कर लिखे जावें								
			आदि में			मध्य में			अंत में		
			स्वरूप	उदाहरण उर्दू	उदाहरण हिंदी	स्वरूप	उदाहरण उर्दू	उदाहरण हिंदी	स्वरूप	उदाहरण उर्दू	उदाहरण हिंदी
م	मीम	म	مـ	مٹر	मटर	ـمـ	کمل	कमल	ـم	قسم	क़सम
ن	नून	न	نـ	نلا	नला	ـنـ	جنم	जन्म	ن	چمن	चमन
			نـ	نفر	नफ़र						
			نمـ	نمک	नमक						
و	वाव	व	و	وبا	वबा	ـو	نول	नवल	ـو	پلو	पल्लव
ه	हे	ह	ہـ	ہتک	हतक	ـہـ	گہن	गहन	ـہ	کلہ	कलह
ی	ये	य	یـ	یل	यत्न						
			یـ	یشم	यश्म	ـیـ	گیا	गया	ـی	سمی	समय
			یـ	یمن	यमन						

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ب बे پ पे ت ते ث से ن नूं और ی ये का स्वरूप नक़्शे
के दर्मियान आदि मे तीन तरह का लिखा गया का-
रन इस का यह है कि س सीन ش शीन ص साद ض ज़ाद
ط तो ظ ज़ो ع ऐन غ ग़ैन ف फ़े ق क़ाफ़ و वाव और ی ये
के साथ तो दूसरी तरह से लिखे जाते हैं और
बाक़ी सब हर्फ़ों के साथ पहली तरह से सिवाय
ج जीम چ चे ح हे خ ख़े और م मीम के कि जिनके साथ
तीसरी तरह से लिखे जाते हैं ڑ ड़े और ڈ डे शब्द के
आदि मे कभी नहीं आते इसी लिये नक़्शे मे उन
का उदाहरण नहीं दिया ک काफ़ और گ गाफ़ का भी
स्वरूप आदि और मध्य मे नक़्शे के दर्मियान दो
तरह का लिखा गया क्योंकि वे अलिफ़ और
लाम के साथ तो दूसरी तरह से मिलते हैं और बा-
क़ी सब हर्फ़ों के साथ पहली तरह से उर्दू मे स्वर की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जगह मात्रा के तौर पर तीन निशानियां ज़बर ज़ेर और पेश की रखी हैं और उन को हरकत कहते हैं ज़बर और पेश व्यंजन के ऊपर और ज़ेर व्यंजन के नीचे लिखा जाता है जैसे:- बेज़बरब बेपेशबु-बेज़ेरबि इन्हीं तीनों हरकत की मदद से सारे व्यंजन उच्चारण होते हैं ज़बर का उच्चारण- ह्रस्व अ होता है और ज़ेर का उच्चारण ह्रस्व इ और पेश का उच्चारण ह्रस्व उ लेकिन जहाँ कहीं ये स्वर व्यंजन के आदि मे अथवा अकेले आते हैं तो उन के साथ एक अलिफ़ भी ज़रूर लिखना पड़ता है जैसे:- अलिफ़ बे ज़बर अब:- अलिफ़ बे ज़ेर इब:- अलिफ़ बे पेश उब अथवा अलिफ़ ज़बर अ अलिफ़ ज़ेर इ अलिफ़ पेश उ अगर इन ऊपर लिखे हुये ह्रस्व स्वरों को दीर्घ करना मंज़ूर होतो उन निशानि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

यों के साथ ا अलिफ़ ی ये और و वाव भी लिखें-
अर्थात् ज़बर के आगे ا अलिफ़ लिखने से आ
जैसे بابا बाबा ज़ेर के आगे ی ये लिखने से ई जैसे
بی بی बीबी और पेश के आगे و वाव लिखने से
ऊ जैसे تو تو तूतू बनजाता है ए और ओ भी ई
ऊ की तरह ज़ेर और पेश से बनते हैं जैसे ے
ए और و ओ केवल इतना भेद कि जहां ज़ेर से ई
और पेश से ऊ बनता है वहां و वाव और ی ये को
मारूफ़ और जहां ज़ेर और पेश से ए और ओ
बनता है वहां उन को मजहूल कहते हैं अगर
ज़बर में ये मिला देवें तो ऐ जैसे بَی बै और ज़बर
में वाव मिला देवें तो औ जैसे بَو बौ हो जाता है
यह भी याद रखने की बात है कि जब कोई स
स्वर व्यंजन से स्वर हीन व्यंजन आ मिलता है

Digitized by eGangotri

अर्थात् दो व्यंजनों के बीच मे देहलीदीपकन्याय से
ह एक ही स्वर होता है तो वह स्वर हिज्जे करने मे
अर्थात् अक्षर अक्षर जुदा बोलने मे दोनों व्यंजन के
पीछे बोला जाता है जैसे ــَــ वत अब देखो यद्यपि-
अकार अर्थात् ज़बर ـَ वे और ــٗ ते के बीच मे
लिखा है पर तो भी बोलने मे वे ते ज़बर वत अर्था
त् ज़बर दोनों व्यंजनो के पीछे बोला जावेगा उर्दू
मे स स्वर को मुतहर्रिक और स्वर हीन को साकि
न कहते हैं जैसे वत मे वे मुतहर्रिक और ते
साकिन है साकिन अक्षर के ऊपर निशानी के
वास्ते ० अथवा ^ लिख देते हैं जैसे वत मे ते के
ऊपर लिखा है उर्दू में जहां कहीं किसी अक्षर
का द्वित्व उच्चारण होता है उस अक्षर को दोदफ़ा
न लिख कर उसके ऊपर यों के से दो दांत जैसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

तशदीद कहते हैं बना देते हैं जैसे شدّت शिद्दत
अब देखो इसमे एक ही दाल लिख कर उसके
ऊपर तशदीद की निशानी बना देने से दो दाल
का उच्चारण हो जाता है अरबी लफ़्ज़ों के अंत
मे जहाँ कहीं इकट्ठे दो ज़ेर या दो पेश या अलिफ़
लिखकर उस पर दो ज़बर लिखे होवें तो वहाँ-
उन के अंतमे इन हर्कतों के साथ अनुस्वारकाभी
उच्चारण करना पड़ता है जैसे اَبٍ अबिं اَبٌ अबुं
और اَباً अबं इस चिन्हका नाम तनवीन है उर्दू
मे ا د ڈ ذ ر ڑ ز ژ و येनी हर्फ़ किसी दूसरे
हर्फ़ से नहींमिल सकते इनमे पेशाक और सब
हर्फ़ आ मिलते हैं और बाकी सब अक्षर चाहो
जितने आपस मे मिलाते चले जाओ पर दस्तूर
ऐसा है कि शब्द शब्द जुदा लिखे जाते हैं एक

Digitized by eGangotri

शब्द के अक्षरों को दूसरे शब्द के अक्षर से नहीं
मिलाते जैसे हिंदी मे रकार और शकार का दूसरे
अक्षरों के साथ मिलने से स्वरूप बदल जाता है
इसी तरह उर्दू के कई अक्षरों का स्वरूप भी
दूसरे अक्षरों के साथ मिलने से बदल जाताहै
ऊपर लिखे हुए नक़शे के देखने से यह बात
अच्छी भांति प्रगट हो जावेगी मुतहर्रिक अर्थात्
ज़बर ज़ेर पेश वाला अलिफ़ जबकि आदि मे
नहीं होता तो उसको इस तरह पर लिखते हैं
: जैसे سائل साइल और इस टेढ़े अलिफ़ को
हमज़ा पुकारते हैं जब कभी शब्द के आदिमेदीर्घ
आ लिखने के वास्ते दो अलिफ़ लिखने का काम
पड़े तो दूसरे अलिफ़ को उस एक अलिफ़ के
ऊपर आड़ा लिख देते हैं और उसे मद पुकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तेहैं जैसे ے ی आम माहरूफ़ और मजहूल का धोखा न पड़ने के वास्ते माहरूफ़ मे गोल ی ये और मजहूल मे लंबी ے ये लिखते हैं जैसे ... वो और ... वे और मजहूल वाव पर यह ^ निशान कर देते हैं जैसे ... ओ ॥ फ़ारसी हर्फ़ ت ... और को हिन्दी अर्थात ट ड और ड़ बनाने के वास्ते तीन तरह के निशान ऊपर लिखे जाते हैं जैसे ٹ ٹ ड और ڑ ड़ और—जैसे ٹ ट ڈ ड और ڑ ड़ और जैसे ٹ ट ڈ ड और ڑ ड़ है दो तरह से लिखी जाती है एक गोल जैसे ० दूसरी दुचश्मी जैसे ھ उर्दू की वर्ण माला मे अल्प प्राण वर्णियों को महाप्राण बनाने के वास्ते जो फ़ारसी वर्णमाला में नहीं हैं यही दुचश्मी है काम मे लाते हैं जिस मे पढ़ने वाला धोखा खा कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हेका अलग उच्चारण न करें जैसे ط वा और ت कहा यद्यपि अक्षर इन दोनों शब्दों मे वही काफ़ है और अलिफ़ हैं तथापि दोतरह की हे लिखनेमे पढ़नेवालेको सहजमे उनके उच्चारणका भेद मालू मही जाताहे परंतु यह सब इशारे और निशान बाल क वच्चे और अनाडियों के वास्ते हैं जव उर्दू जुवान के लिखने पढनेका अछी तरह अभ्यास होजाता है तो फिर इहतियाज हर्कात वल्कि नुक़तोंकीभीनहीं रहती और नफिर कोई हर्कात और नुक़ते देता है निदान उर्दूको उसी तरह अटकलसे सोच कर पढ़ना पड़ताहै कि जिस तरहपर महाजनलोगमुडि या अर्थात विनामात्राके हिंदी हर्फों को अटकल से जोड़ जोड़ कर पढलेते हैं छोटीसी भी एक किताव पढलेनेसे वख़ूबी रवत होजावेगा और तव हर्कात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और नुक़तों का आसरा न मिलने से पढ़ना कुछ मुशकिल न होगा नमूने के तौर पर हम यहां दो चार पंक्तियां हर्कत सहित और दो चार बिना हर्कत और उनके साम्हने वही बात हिंदी हर्फ़ों मे भी लिख देते हैं

ईश्वर से डरो वह तुम्हारे	اِیشوَر سے ڈَرو وہ تُمھارے
सब काम देखता है ॥	سَب کام دیکھتا ہے
मा बाप का हुकम मानो	ما باپ کا حُکم مانو
उन्होंने तुमको पाला है	اُنھوں نے تمکو پالا ہے
सब किसी को अपने भाई	سَب کِسیکو اپنے بھائی
बराबर समझो हम सब-	برابر سمجھو ہم سب
एक ही आदमी से पैदा हुए हैं	ایک ہی آدمی سے پیدا ہوئے ہیں
किसी जीव को मत सता और वह	کِسی جیو کو مت ستاو وہ
भी तुम्हारी सी जान रखता है	بھی تمھاری سی جان رکھتا ہے

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सर्कार अंग्रेज़ी की ईश्वर से	سرکار انگریزی کی ایشور سے
बढ़ती मनाओ ऐसा सुख किसी	بڑھتی مناؤ ایسا سکھ کسی
की भी अमल्दारी में न हो पाया था	کی بھی عملداری مین نہین پایا تھا
बुरे काम मत करो ऐसे काम	برے کام مت کرو ایسے کام
करने वालों को ईश्वर से	کرنے والون کو ایشور سے
सज़ा मिलती है ॥	سزا ملتی ہے
झूठ मत बोलो नहीं तो तुम्हारा	جھوٹھ مت بولو نہین تو تمھارا
सच भी कोई न ही पतियावेगा	سچ بھی کوئی نہین پتیاوے گا
बदन साफ़ रखो और कपड़े	بدن صاف رکھو اور کپڑے
मैले मत करो जो ग़लीज़	میلے مت کرو جو غلیظ
रहोगे कोई तुमको अपने	رہوگے کوئی تمکو اپنے
पास नहीं बिठलावेगा ॥	پاس نہین بٹھلاوے گا
किताब अपनी ख़राब मत	کتاب اپنی خراب مت
करो इसी बात में लड़कों की	کرو اسی بات مین لڑکون کی

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अकलमंदी मालूम हो जाती है	عقلمندی معلوم ہوجاتی ہے
बहुत मत खाओ बहुत	بہت مت کھاؤ بہت
खाने से आदमी बीमार	کھانے سے آدمی بیمار
होता है॥	ہوتا ہے
रस्ते में दौड़ कर मत चलो	رستے میں دوڑ کر مت چلو
और किसी से दंगा फ़साद	اور کسی سے دنگا فساد
मत करो ऐसी बातों से	مت کرو ایسی باتوں سے
लड़कों की बेवकूफ़ी	لڑکوں کی بیوقوفی
और कमीनापन ज़ाहिर	اور کمیناپن ظاہر
होता है॥	ہوتا ہے

उर्दू में एक यह भी बात याद रखनी चाहिये कि .... कितने ही हर्फ़ दो दो तीन तीन बल्कि कई तरहों से लिखे जाते हैं जो ख़त साफ़ होता है और गोलदाइरों के साथ लिखा रहता है उसको नस्तालीक़ कहते हैं...

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

औरजो जलदी और घसीट कर लिखते हैं उसको
शिकस्ता पुकारते हैं यदि शिकस्ता लिखने मे तो प्राय
सारे अक्षरों के स्वरूप कुछ न कुछ बदल जाते हैं
पर जिन अक्षरों का स्वरूप बिलकुल बदल जाता है
वे ن ل ک ذ د خ ح چ ج ا और ی
हैं कि जो शिकस्ता मे ف و خ ح چ ج ا
ی ز ر ل ا लिखे जाते हैं सिवाय
इसके यह भी याद रखना चाहिये कि शिकस्ता मे अलिफ़
ی و ن ش س ژ ز ر ذ د خ ح چ ج से और
दाल ज़ाल ه و ل ذ د خ ح چ ج ا से और रे ज़े
م ل ژ ز ر ذ د خ ح چ ج ا से और वाव
ذ د خ ح چ ج ا से मिल भी जाते हैं उदाहरण
के लिए दो चार पंक्तियां शिकस्ता हर्फ़ों मे बिना हर्कात
और नुक़्तों के नीचे लिखकर वही बात उसके साम्हने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हिंदी मे भी लिखदेते हैं दस बीस कागज़ शिकस्ता लिखे हुए पढ़ लेने से फिर अभ्यास हो जाता है लिखना सीखने के लिये जो कोई उस्ताद न मिले तो किसी अच्छे ख़ुश ख़त नस्तालीक़ उर्दू लिखे हुई या पत्थर के छापे की छपी हुई किताब की नक़ल करें पर हाथ जमाने के लिए पहले बड़े हर्फ़ों की मश्क़ करें तो अच्छा है लखनऊ के छापे की तालीमें मश्क़ के वास्ते बहुत अच्छी और सस्ती बिकती हैं

तुमसबकेसाथदोस्ती
रखोगेतोसबभीतुम्हारे
साथदोस्ती रखेंगे ॥
जितने दोस्तबढ़ाओगे
उतनीमददपाओगे ॥

تم سب کے ساتھ دوستی
رکھو گے تو سب بھی تمہارے
ساتھ دوستی رکھیں گے
جتنے دوست بڑھاؤ گے
اتنی مدد پاؤ گے

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जितने दुश्मन करोगे उतनी
आफ़तें झेलोगे ॥
पढ़ने में अपना हि दिल
लगाओ क्योंकि इ़ल्म के
बराबर और कोई दौलत इस
दुनियां में नहीं है न तो इसको
भाई भतीजे बांट सकें और
न चोर चुरा सकें न राजा इसको
छीन सके और न दूसरे को देने
से यह कभी घटे इ़ल्म वाले
आदमी की हर शख़्स ख़ातिर
करता है और उसके मन को कभी
भी किसी बात का दुःख नहीं होता
॥ इति ॥

جتنے دشمن کروگے اتنی
آفتیں جھیلوگے
پڑھنے میں اپنی طبع دل
لگاؤ کیونکہ علم کے
برابر اور کوئی دولت اس
دنیا میں نہیں ہے نہ تو اسکو
بھائی بھتیجے بانٹ سکیں اور
نہ چور چرا سکیں نہ راجا اسکو
چھین سکیں اور نہ دوسرے کو دینے
سے یہ کبھی گھٹے علم والے
آدمی کی ہر شخص خاطر
کرتا ہے اور اسکے من کو کبھی
بھی کسی بات کا دکھ نہیں ہوتا

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE